बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

नर और नारी, बेटी और बेटा, स्त्री एवं पुरुष दोनों सृष्टि के आधार हैं। बेटी नारी जाति का प्रतिनिधित्व करती है। बेटी पिता के दो नैत्र के समान है। बेटा का स्थान बहुत ऊंचा है। बेटी और बेटों में अन्तर किये बिना दोनों को एक समान देखना चाहिए। बेटी को भार नही समझना चाहिए। आज समाज की सोच में कुछ परिवर्तन देखा जा रहा है। इसके कारण बेटियों को बचाने और उनकी सुरक्षा की बात की जा रही है। कभी–कभी भ्रूण परीक्षण करवाकर बेटी को गर्भ में ही समाप्त कर दिया जाता है। इससे समाज में असंतुलन की स्थिति आ रही है। यदि बेटी ही नहीं रहेगी तो समाज में अव्यवस्था फैल जाएगी। लिंगानुपात गड़बड़ हो जाएगा जिससे समाज में दुराचार, भ्रष्टाचार बढ़ेगा।

नर और नारी के संयोग से सृष्टि चलती है। कोई एक सृष्टि को नहीं चला सकता। इसलिए नर और नारी दोनों का सममूल्य है। नारी ही किसी की बेटी होती है किसी की बहु होती है किसी की दादी होती है। किन्तु आजकल समाज की विकृत मानसिकता के कारण भ्रूणहत्या का प्रचलन बढ़ गया है। स्त्री और पुरुष का अनुपात सृष्टि में पचास–पचास प्रतिशत का होना चाहिए। सृष्टि को संतुलित रखने और चलाने के लिए यह अनुपात बहुत आवश्यक है। किन्तु भ्रूणहत्या के कारण यह संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

भ्रूण हत्या का सबसे बड़ा कारण है दहेज प्रथा। दहेज का दानव समाज में बढ़ता जा रहा है यह एक प्रकार का सामाजिक अभिशाप है। लड़की की शादी के समय लड़की के परिवार वालों के द्वारा लड़के या उसके परिवार वालों को नगद या किसी भी प्रकार की किमती वस्तु बिना मूल्य में देने को दहेज कहा जाता है। दहेज एक सामाजिक समस्या है। यह गैरकानूनी है, फिर भी समाज में खुलेआम चल रही है। यह प्रथा बहुत प्राचीनकाल से भारतीय समाज में व्याप्त है। किन्तु पहले इसका इतना विकृत रूप नहीं था जितना आज है। पहले लोग इच्छानुसार लड़की को पति के घर जाते समय उसके साथ कुछ वस्तुएं उपहार के रूप में

दिया करते थे। लेकिन आज लड़की के विवाह में दहेज देना बाध्यकारी हो गया है। समाज में हर व्यक्ति के लड़के और लड़की होते है। हर व्यक्ति इस समस्या से ग्रसित है। जब लड़के का विवाह होता है तो वह दहेज लेता है और बहुत प्रसन्न होता है। जब लड़की का विवाह करता है तो उसे दहेज देना पड़ता है और उस समय उसे बहुत कष्ट होता है। इस समस्या से समाज के हर वर्ग के लोग परेशान है, फिर भी इसको छोड़ना नहीं चाहते।

महात्मागांधी ने कहा था जो भी व्यक्ति दहेज को शादी की जरूरी शर्त बना देता है, वह अपने शिक्षा और अपने देश को बदनाम करता है और पूरी महिला जाति का भी अपमान करता है। दहेज प्रथा का प्रचलन समाज के हर वर्ग में है। जो जितना बड़ा अधिकारी या जितना अधिक पैसे वाला है वह शादी विवाह में उतना अधिक दहेज प्राप्त करने की इच्छा रखता है। इसलिए यह कहना कि अज्ञानता के कारण यह प्रथा चल रही है ठीक नहीं है। आजकल लोगों की यह मानसिकता बन गई है कि पढ़ाई–लिखाई में जितना पैसा खर्च हुआ है वह दहेज के माध्यम से वसूल लिया जाये। यह प्रथा इसीलिए बढ़ती जा रही है। लड़के और लड़कियां दोनों ही समाज के कर्णधार है। दोनों का बराबर अधिकार है। लेकिन समाज की गिरी हुई सोच के कारण यह माना जाता है कि बेटी पराया धन है और विवाह होने के बाद वह दूसरों के घर चली जायेगी। यह सोचकर कुछ लोग बेटी को अधिक पढ़ाते–लिखाते नहीं। किन्तु जो लोग इस सोच से परे है और लड़कियों को उच्च शिक्षा देकर उसका जीवन निर्माण करते है वे प्रगतिशील विचारों के होते है।

नारी जाति को ईश्वर का यह वरदान है कि वह करूणा की मूर्ति है। हर समाज में अपने को संतुलित रखकर के आगे बढ़ सकती है। जब बेटी ससुराल जाती है तो माता–पिता का जितना ध्यान रखती है पुत्र उतना कभी नहीं रखता। पुत्री कभी भी मायके की बुराई सुनना नहीं पसंद करती। वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा, सेना, न्याय, चिकित्सा और प्रशासनिक सेवाओं में लड़कियां लड़कों से आगे जा रही है। नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार भी पर्यासरत है। स्त्री शिक्षा पर सरकार खुब पैसा खर्च कर रही है। हर क्षेत्र में स्त्रीयों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

सरकारी विद्यालयों में बेटियों को पढ़ाने के लिए निःशुल्क शिक्षा सरकार के द्वारा की गई है। बेटी किसी भी रूप में बेटों से कम नहीं है। बेटा और बेटी दोनों समाजरूपी रथ के दो पहिये है। दोनों पहिये अगर ठिक से रहेंगे तभी समाजरूपी गाड़ी ठीक से आगे बढ़ेगी। बेटी दो घरों को संभालती है। जब तक वह पिता के घर में रहती है तो पिता के आंख की पुतली बनी रहती है और जब पति के घर जाती है तो वहां के माहौल में अपने को ढ़ालती है। उस परिवार के रीति–रिवाज, खान–पान, रहन–सहन को अपने अनुकूल बनाती है। इसलिए कोई भी कार्य हो सभी कार्यों में पति और पत्नी दोनों की सहमति होनी चाहिए। पढ़ी–लिखी बेटी ही दोनों कुलों को रोशन करती है। नारी सृष्टि को चलाती है। यदि भ्रूण में ही उसका विनाश कर दिया जाये तो सृष्टि कैसे चलेगी। भ्रूण हत्या महापाप है। सरकार के द्वारा भी इस पर कठोर कानून बनाया गया है और सजा का प्रावधान है।